Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

दलित एवं आदिवासी- विमर्श

हिन्दी दलित कहानी : सामाजिक दस्तावेज़ एवं दलित आत्म संघर्ष की जीवन्त अभिव्यक्ति

आशीष कुमार'दीपांकर'
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
मो0नं0– 09795508915

प्रस्तावना–

''उठो, अछूत कहलाने वाले असली जनसेवकों तथा भाइयों! उठो अपना इतिहास देखों गुरु गोबिन्द सिंह की फौज की असली शक्ति तुम्ही थे। शिवाजी तुम्हारे भरोसे ही सब कुछ कर सकें,..... तुम्हारी कुर्बानियाँ स्वर्णाक्षरों में लिखी हैं।.....उठो, अपनी शक्ति पहचानों संगठन बद्ध हो जाओ। असल में स्वयं कोशिश किए बिना कुछ भी न मिल सकेगा। स्वतंत्रता के लिए स्वाधीनता चाहने वालों को यत्न करना चाहिए।.....तुम दूसरों की खुराक मत बनो। दूसरों के मुंह की ओर न ताको।.....यही पूँजीवादी नौकरशाही तुम्हारी गुलामी और गरीबी का असली कारण है।.....उठो, और वर्तमान व्यवस्था के विरूद्ध बगावत खड़ी कर दो। धीरे, धीरे होने वाले सुधारों से कुछ नहीं बन सकेगा। सामाजिक आन्दोलन से क्रान्ति के लिए कमर कस लो। तुम ही देश का मुख्य आधार हो, वास्तविक शक्ति हो।''[1]

'भगत सिंह'

राष्ट्र, समाज, परिवार, और व्यवस्था मनुष्य जीवन के विकास के लिए है, मनुष्य इन सबके मूल में है, यदि मनुष्य ही नहीं तो इनका अस्तित्व किस लिए। सिन्धुघाटी सभ्यता के ठीक बाद भारत में वैदिक व्यवस्था का सृजन आर्यों ने किया। इस व्यवस्था को सृजन 'भारत में रहने वाले लागों को 'वर्ण' के आधार पर बाँ देता है, उसी समय से भारत में एक ऐसा वर्ग पैदा होता है, जिसके लिए राष्ट्र समाज, परिवार एवं व्यवस्था का कोई मतलब ही नहीं था। उसे किसी न किसी तरह से दो वक्त की रोटी दे दी जाती थी– जिससे वह जिन्दा रह सकें मरे नहीं और जिन्दा भी किसलिए रहे– भारत में– रहने वाले– उसके इतर तीन वर्णों की सेवा करने के लिए– इन तीनों वर्णों ने उसे इसीलिए जिन्दा रखा। सदियों सेउसे अपने **जूठन** खाने को देते रहे–उससे अपना विष्ठाघर साफ करवाते रहे– उसका अपने जीवन के इतिहास में कहीं नाम नहीं लिखा,

[1] वागर्थ, जून 2004, पृष्ठ सं0–10

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

अपना इतिहास लिखा, अपनी बात लिखी, वह भी इनके साथ रहता है, इनकी सेवा करता है, इनके जीवन को बचाता है, इसका भी जिक्र नहीं किया। जिस तरह से उसका शोषण हो सके; उसका शोषण किया।

व्यवस्था बनाने वालों को इस बात का डर तो था कि कहीं यह दास या सेवक वर्ग, विरोध न कर बैठे इसलिए उन्होंने, वेदों को ईश्वर द्वारा लिखित बताया, वह इनकी सेवा इसलिए करता है, कि उसने पिछले जन्म में पाप किया था, समाज में पाप–पुण्य की अवधारणा का विकास किया गया जाल बड़ी सफाई से बुना गया– सब कुछ अलौकिक, आध्यात्मिक एवं शून्यमय बना दिया गया। जब भी यह वर्ग प्रश्न करता इसके लिए भूख की थी'– पेट की भूख ने इसे कभी तर्क ही नहीं करने दिया।

प्रकृति परिवर्तनशील है, दलित संघर्ष का इतिहास भी उतना ही पुराना है, जितना भारतीय समाज; पर वह हमें लिखित नहीं मिला, कारण कि दलितों के पास शिक्षा नहीं थी; आने वाले मनीषियों ने– (बुद्ध, फूले, गाँधी, अम्बेडकर आदि) समय–समय पर किसी न किसी रूप में– दलितों की मुक्ति का प्रश्न उठाया, अंग्रेज भारत में आए तो जीवन को बहुत कुछ और बदल गए।

''पूर्व ने सभ्य मानव को आध्यात्मिक दर्शन प्रदान किया।'' मुनरो कहता है, पूर्व ने पश्चिम को बहुत कुछ दिया– इसलिए पश्चिम उसे जगद्गुरू मानता रहा; यह प्रशंसा बहुत उत्कृष्ट और अच्छी लगती है? लेकिन हमने अपने ही घर में रहने वाले दलित वर्ग को कभी नहीं देखा–'' हमारा देश बहुत आध्यात्मवादी है, लेकिन हम मनुष्य को मनुष्य का दर्जा देते हुए भी झिझकते हैं, जबकि पूर्णतया भौतिकवादी कहलाने वाला यूरोप सदियों से इन्कलाब की आवाज उठा रहा है।'' आज 21वीं सदी में जब हम एक विकसित राष्ट्र होने का दम भरते हैं, तब हमारा जीवन दर्शन इतना पीछे–क्यों है कि –हम मानव को मानव नहीं मान पाते–'' कितने शर्म की बात है कि कुत्ता हमारी गोद में बैठ सकता है .... हमारी ससोई में निःसंग फिरता है लेकिन एक इन्सान का हमसे स्पर्श हो जाए तो धर्म भ्रष्ट हो जाता है।'' धर्म मानव के लिए, पवित्रता सूचक है। फिर दलित वर्ग के साथ ऐसा भेदभाव क्यों?

मनुष्य संस्कृति और सभ्यता का इतना इतिहास बीत गया– फिर भी– आज हम– इस बात पर अपने–दूसरे भाई को मार डालते हैं– कि– वह दूसरी जाति की लड़की से प्रेम क्यों करता, विधवा स्त्री किसी पुरूष के सम्पर्क में न आए, ये सामाजिक मुद्दे हमें अपनी बात करने ही नहीं देते आज 21वीं सदी में हम अछूत समस्या पर बात करते हैं– जो पहले ही खत्म हो जानी चाहिए थी, ये प्रश्न हमारी जमीन से जुड़े हुए है।

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था ने, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार दिया। जीवन की कुछ परिस्थितियाँ बदली दलितों ने कुछ सम्मान की रोटी खाई–उन्होंने पढ़ा हमारी संस्कृति का इतिहास क्या हैं? आगे आने वाली पीढ़ियाँ हमें किस रूप में जानेगी– पर बात वही है– 'हमें मरना था हम मर गए/ हमें कोई जानना नहीं चाहता/ न हमने मरते हुए 'हे राम! कहा' / न हमारी समाधि राजघाट पर बनी/ न लोगों ने उस पर दिए जलाए/ क्योंकि हम एक परिभाषा बद्ध आदमी थे।''– तब दलितों ने समाज के सामने अपनी बात रखनी शुरू की, उन्हें इस व्यवस्था का छल पता चल गया– उन्हें भी पता चला कि ईश्वर जैसा कुछ नहीं है, सब कुछ मनुष्य जैसा ही है; वह मनुष्य है, उन्हीं की तरह हम भी मनुष्य हैं– अतः उन्हीं की तरह जीने का हमें भी अधिकार है, हम विष्ठाघर साफ करने मात्र से हम अपवित्र अछूत नहीं हो जाते। 'तर्क जाग गया' चेतना जीत गई उन्हें पिछली परम्परा में अपना शोषण दिखा अब बात तो उसी से करनी थी– तो उन्होंने कहना शुरू किया। लक्ष्मण गायकवाड़ कहते हैं'' जब लोग कहते हैं कि भारत मेरा देश है, सारे भारतीय मेरे बन्धु हैं, मुझे देश की परम्परा का अभियान है। मुझे लगता है कि अगर सब कुछ सही है तो फिर हमें बिना अपराध के पीटा क्यों आता है? अगर सभी भारतीय भाई–भाई हैं तो फिर हम जैसे भाइयों को काम क्यों नहीं दिया जाता है हमें खेती के लिए जमीन क्यों नहीं दी जाती (हमें घर में दास क्यों रखा जाता है?) ऐसी स्थिति में इस देश की परम्परा का अभियान मैं (हमें) क्यों और कैसे (हों) रखूँ...[1]

दलित साहित्य चाहे वह मराठी में हो, हिन्दी में हो या भारत की अन्य भाषाओं का हो–जितनी दलित आत्मकथाएं लिखी गई हैं उसमें एक व्यक्ति ने अपना जीवन व्यक्त किया है– राजेश पासवान कहते हैं– ''एक अच्छी आत्मकथा में एक व्यक्ति के परिवतन एवं उसकी प्रगति के लिए संघर्ष के साथ उस समय का इतिहास भी जिन्दा रहता है। इसलिए दलित आत्मकथाएं उन शिला लेखों की तरह हैं जिनके तथ्यों पर दलित इतिहास की नींव खड़ी होगी।''

रामदरश मिश्र 'सर्पदंश' में और एक दाहक दृश्य को पेश करते हैं। इस कहानी का नायक हरिजन गोकुल है। वह अपनी पेट की आग बुझाने के लिए रात के खेत में मक्कइ लाने के लिए जाता है और वहाँ उसकों साँप काँट लेता है। वह जिंदगी से ऊबकर वहाँ ही पड़ा

[1] दलित आत्मकथाओं की जरूरत
वैचारिणी–राजेश पासवान हंस, अगस्त 2004, पृष्ठ सं0–106

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

रहता है। गाँव का एक व्यक्ति उसे भवानी बाबा के यहाँ लेकर आता है। तो प्रधान उस पर चोरी का आरोप लगा देता है। उस आरोप के कारण किया गया शोषण दृष्टव्य है, ''प्रधान के लड़के ने उसके पेट पर लात मारी, दूसरे ने उसकी गर्दन पकड़वाकर दबा दी। एक आदमी ने उसकी बांह पकड़कर मरोड़ दी। उसका दम घुटने लगा, वह छटपटाने लगा। उसकी आँखे बाहर निकलने लगीं। कुछ देर बाद लड़के ने उसकी गर्दन छोड़ दी और हाथ पकड़ने वाले ने उसे जोर का धक्का दिया।'' 'जा साले। वह कटे हुए पेड़ की तरह नीचे लुड़क गया– ठंडा निस्पंद। इस तरह गोकुल की दयनीय एवं करूण जिंदगी की झाँकी इस कहानी में स्पष्ट है।

नरेन्द्र मौर्य ने 'कमीज' में रामनाथ के शोषण को उजागर किया है। अमरनाथ भाई साहब का नौकर है। एक दिन भारी वर्षा के कारण भाई साहब की भैंस गुम हो जाती हैं। वैसी भारी बरसात में रामनाथ भैंस ढूँढ़ने जाता है और उसका अंत होता है और अंत के बदले फटे–पुराने कपड़े दिये जाते है। अपना कर्ज चुकाने के लिए और शिक्षित छोटे भाई को रख लिया जाता है। अंत के बदले फटे–पुराने कपड़े देना यह स्वतंत्र भारत में कितनी बड़ी विडंबना कही जायेगी। रमाकान्त की 'बयान' दुलारू के जीवन को व्यक्त करती है। दुलारू किरपाल सिंह का नौकर है। वह भूख से बेहाल होकर थानेदार अपने द्वार के बयान में वह खाये हुए भोज का बयान करता है तो थानेदार उसको जी भर पीटते हे। अब्दुल्लाह बिस्मिल्लाह की 'खाल खींचते वाले' कहानी में भूनेसर का शोषण हुआ है। भूनेसर की खाल की कीमत बाजार में पच्चीस–तीस रूपये से कम नहीं लेकिन खाल का व्यापारी 'बड़े मिया' केवल पंद्रह रूपये थमा देता है। और इस पंद्रह रूपये से मालिक को पाँच रूपये देने हैं। इससे भूनेसर हक्का–बक्का हो जाता है। उन पंद्रह रूपये को हाथ में दस बार मसलता हुआ लौटता है। भूनेसर इन दोनों के चक्की में पीसा जाता है। अभय कुमार सिन्हा की 'एक और अंत' में टूनरा की चरमराती जिंदगी है। उसको रिक्शा मालिक कंडम रिक्शा देकर उस से भाड़ा वसूल कर लेता है। केवल जमींदारों और ठेकेदारों द्वारा ही पुरूष शोषण हुआ है ऐसा नहीं स्कूल में भी दलित विद्यार्थियों का शोषण हुआ है।

श्रीविलास डबराल ने 'बिच्छूघास' कहानी में दलित विद्यार्थी पर हुए अन्याय का चित्रण किया है। स्कूल को पवित्र मंदिर जिसे हम कहते हैं वहाँ भी दलित विद्यार्थी के शोषण में कमी नहीं हे। इस कहानी में मुस्सा को दुर्गा की रोटी छूने से सभी सवर्ण लड़के जी–जान से पीटते ही हैं पर पंडित मास्टर भी बिच्छूघास से पिटते हैं। बाद में मुस्सा एक हॉटेल में नौकर रहता है। इसके

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

संदर्भ में जुड़ती ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'पच्चीस चौका डेढ़ सौ' में भी दलित विद्यार्थी है। सुदी का मास्टर शिवनारायण हत्थे द्वारा शोषण होता है। इस प्रकार से शिवनारायण सुदी का अपना क्रोध व्यक्त करते हैं, ''अब तेरा बाप इतना बड़ा विद्वान है तो यहाँ क्या अपनी माँ .... आया है। साले; तुम लोगों को चाहे कितना भी सिखाओं, पढ़ाओं रहोगे वहीं के वहीं.... दिमाग में कूड़ा करकट जो भरा है। पढ़ाई–लिखाई के संस्कार तो तुम लोगों में से आ ही नहीं सकते चल बोल ठीक से... पच्चीस चौका सौ .... स्कूल में तेरी थोड़ी इज्जत क्या होने लगी पाँव जमीन ही पर नहीं पड़ते। ऊपर से जबान चलावे। उलटकर जवाब देता है।'' इस प्रकार से दलित व्यक्ति का शोषण स्कूल में भी अछूता नहीं। बड़ी मेहनत मशक्कत संघर्ष करके विद्यार्थी पढ़कर नौकरी–पेशा करते तब वहाँ उनका शोषण होता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की **'कुचक्र'** कहानी में ऑफिस में होते दलित व्यक्ति के शोषण को उजागर किया है। इस कहानी में आर.बी. निदेशक पद पर आसीन है। इस ऑफिस में निशिकांत कई साल से नौकरी करता है। पर उसका प्रमोशन नहीं होता इसीलिए निशिकांत आर.बी. के साथ षड्यंत्र रचाता है। ऑफिस में षंड्यंत्र सफल न हो पाया तो परिवार से राजनीति खेलता है निशिकांत की लड़की हेड़पम्प वाले से प्रेम करती है परिणामस्वरूप पंपवाले और निशिकांत में झगड़े होते हैं। इस झगड़े में निशिकांत खुब पीटा जाता है। ऐसे समय पर आ.बी. इसे अस्पताल पहुँचाता है, लेकिन निशिकांत आर.बी. के विरूद्ध थाने में रपट कर देता है। आर.बी. को थाने में बंद कर खूब पीटा जाता है। थानेदार का एक वाक्य द्रष्टव्य है। ''तुम साले पढ़े–लिखे लोग शराफत की भाषा नहीं जानते। पुलिस के डंडे जब चूतड़ो पर पड़ेंगे सारी सच्चाई सामने आ जायेगी। इन्स्पेक्टर ने चीखते हुए कहा।''

विपिन बिहारी ने **'कठपुतली'** कहानी में पुरूष शोषण का दूसरा चित्र हमारे सामने लाया है। दलित श्यामरजक एक उच्च अफसर है। इसके ऑफिस के सभी लोग षड्यंत्र रचाकर झूठे बिल पर दस्तखत करवा लेते हैं। इसके साथ–साथ उसको औरत और बोतल की आदत लगा देते हैं। इतना ही नहीं इसकी लड़की कॉलेज कुमारी विवेका की नंगी तस्तीरें निकाली जाती है। झूठे बिल के आरोप में उसको जेल की हवा भुगतनी पड़ती हे। परिवार की सभी विसंगति हो जाती है। इस प्रकार से दलित व्यक्ति के साथ ऑफिस कर्मचारी से देकर मंत्रिगणों तक षड्यंत्र रचाकर उसकी जिंदगी खारिज की जाती है। दूसरा रंजक उदाहरण रघुनाथ 'पन्ना धाय का दूसरा बेटा' में मिलता है। जिस जमींदार परिवार

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

की गुलामी में डिप्टी की माँ ने अपनी तमाम जिंदगी खपा रख दी, उसके बड़े भाई धाईया ने जिस खानदान की वंश बेल बचाने के लिए अपने प्राणों को गोली से उड़ जाने दिया, उस रजवाड़े को जब डिप्टी बचाने के लिए पहुँचा तो उसको ही फांसी के फँदे पर लटकने का समय आ गया है। इस प्रकार से व्यापक रूप में ऑफिस कार्यालयों में दलित पुरूषों का बड़े पैमाने पर शोषण हुआ है। शत्रुध्न कुमार की 'तबादला' कहानी में भी डॉ. शैलेश, विपिन बिहारी की 'षड्यंत्र' में रामादीन का शोषण हुआ है।

द्विदशक की कहानी में पुरूष शोषण जमींनदारों, ठाकुरों, ठेकेदारों ऑफिसों, स्कूलों में हुआ है। पुरूष शोषण का चित्रण दयनीय एवं असहनीय रहा है। ऐसे शोषण का उदाहरण अन्य कहीं नहीं मिल पायेगा। इस अभ्यास के अंतर्गत कुछ कहानियों के दाहक प्रसंग को केन्द्र में रखते हुए पुरूष शोषण पर प्रकाश डाला गया है।

शिक्षित युवक की थोथी मानसिकता–

जाति–प्रथा, नारी शोषण, पुरूष शोषण, दलित व्यक्ति की घुटनभरी जिंदगी आदि के साथ–साथ द्विदशक की कहानियों में थोथी मानसिकता का भी दर्शन होता है। व्यक्ति जब पढ़–लिखकर नौकरी–पेशा करने लगते हैं। तब आधुनिक वातावरण के परिणाम–स्वरूप अपने माँ–बाप, परिवार, समाज तक के रिश्ते–नातों को भूल जाते हैं। इसका स्पष्ट उल्लेख ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'अंधड़' कहानी में हुआ है। कहानी के नायक मिस्टर लाल जो बड़ी संस्था में वैज्ञानिक के पद पर आसीन है। कई वर्षो के बाद मिस्टर लाल अपनी छोटी बच्ची 'पिंकी' को लेकर अपनी माँ–पिताजी के घर आते है, तब माँ–पिताजी का रहन–सहन देखकर पिंकी उसे बेनकाब जिंदगी की ग्रंथी खोल देते हैं। ''पिंकी तुम्हें इस तरह नहीं बोलना चाहिए, ये सब तुम्हारे नाना मामा हैं। उन्हें तुम असभ्य और गंदा कह रही हो। गलती तुम्हारी नहीं है, बेटी .... मेरी है। मैं अपनी तरक्की को ही सब कुछ समझ बैठा था। इसीलिए मैं इन्हें उसी नजरिये से समझ बैठा था, जैसे तुम देख रही हो, लेकिन आज जहाँ मैं हूँ .... तुम हो..... उसे पाने में इनका बहुत–बहुत बड़ा हाथ है.... ये न होते, तो शायद मैं भी इतना बड़ा वैज्ञानिक न बन पाता। ये खुद नरक में रहे, लेकिन मुझे नरक से निकालने में जो त्याग उन्होंने किया ..... उसके बदले में इन्होंने न कुछ माँगा, न मैंने इन्हें कुछ दिया, बल्कि इन्हें अपने से तुच्छ मानकर रिश्ते तक तोड़ बैठा... तुम लोगों को इनसे दूर रखा। सच तो यह है कि मैं मि. लाल ऐसे वृक्ष की तरह हूँ, जो अपनी जड़ो को ही अपनी छाया नहीं देता .... मेरी असली पहचान तो यह 'सुक्कड़' ही है, जिसे मैंने एस.

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

लाल में बदलकर एक झूठी जिंदगी को सच मान लेने की कोशिश की। यह असभ्य भी नहीं.... पिंकी तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। यह व्यक्त करते समय मि. लाल का गला भर आया और पश्चात्य करने लगा। मि. लाल का वृक्ष बड़ा हुआ लेकिन इस वृक्ष को जिन जड़ों ने बड़ा किया उस जड़ो से रिश्ता काटकर थोथी मानसिकता में जिंदगी काटने लगा। इस पश्चाताप से मि. लाल अपने अंधड़ का वजूद ढूंढ़ने लगा। यह कहानी शिक्षित व्यक्ति की मानसिकता को उजागर करती है।''

अजय यतीश के **'स्टेटस'** कहानी में झूठी बेनकाब जिंदगी एवं थोथी मानसिकता दिखायी देती है। सेनिटेशन विभाग में रची। पर काम करके मेवालाल ने बड़ी मेहनत से अपने बेटे को डाक्टर बनवाया। जब इस डाक्टर को देखने के लिए कमिश्नर साहब आये और अपना स्टेटस संभालते हुए इधर–उधर की बातें करते चले गये। रबीपर के बच्चे को कमिश्नर साहब ठुकरा देते हैं, क्योंकि उसका बाप स्विपर है। इस कमिश्नर की थोथी मानसिकता का प्रकाशन होता है विपिन बिहारी की 'तीर्थ यात्रा' में यही चित्र है। इस कहानी के नायक एम.राम प्रतिष्ठित इंजीनियर है। इंजीनियर होने के बाद एक पार्टी का आयोजन किया था। उस पार्टी में विजय शुक्ला की पहचान हो गयी और प्रेम–विवाह हुआ। जब जैसे ही एम. राम का विवाह हुआ वैसे ही उनकी मानसिकता बदल जाती है। वह विजया शुक्ला के ब्राह्मणी मानसिकता में मिल गया। अपनी माँ–बाप की ओर कभी जाता नहीं, न कुछ भेजता, सारा जीवन ऐश आराम में गुजारताहै। रिटायर होने के बाद परिवार में ही उसकी घृणा होती है। यही चित्र कुसुम वियोगी की 'सुपिरियर' कहानी में मिलता है। शिक्षित युवक की थोथी मानसिकता में मिल गया। अपनी माँ–बाप की ओर कभी जाता नहीं, न कुछ भेजता, सारा जीवन ऐश आराम में गुजारता है। रिटायर होने के बाद परिवार में ही उसकी घृणा होती है। चित्र कुसुम वियोगी की 'सुपिरियर' कहानी में मिलता है। शिक्षित युवक की थोथी मानसिकता पर यह कहानी प्रकाश डालती है।

स्वरूपचंद्र ने **'इशारा'** में भी थोथी मानसिकता का प्रकाशन है। इसमें मद्धे पहलवान की जाति भंगी है और अच्छा–खासा पहलवान भी है। उसने मेहनत मजदूरी करके बेटे कर्मा को इंजीनिअर, वीरा को डॉक्टर और बड़े दो बेटों का अच्छा पहलवान बनाया। 'दंगल' (कुश्तियों) में जाति के कारण झगड़े से मद्धे के बेटों को जेल में बंद किया जाता है। निर्दोष बेटा करमा को भी सजा की भट्टी में भूना जाता है। मद्धे की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो जाती है। सबसे छोटे बेटे के पास कुछ पैसों की खबर पहुँचायी जो

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

पूरा डॉक्टर बन चूका था और बनिया जाति की लड़की, जो स्वयं डॉक्टर थी, उससे शादी करके सफल गृहस्थ जीवन बिता रहा था। उसने अपने अछूता पिता से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था और अपनी बीवी के कहने पर चिठ्ठियों तक का जवाब देना बंद कर दिया था। उसके ससुराल वालों का दबाव था कि वह ऐसी क्रिमिनल वारदातों में कोर्ट कार्यवाही से अलग रहे। इधर पिताजी मद्धे को खाने के लाले पड़ते हैं।

अतः द्विदशक की कहानियों में शिक्षित युवक की थोथी मानसिकता एवं झूठी बेनकाव जिंदगी का चित्रण हुआ है।

सामाजिक परिवर्तन–

बीसवीं शताब्दी की अन्तिम द्विदशक का समय दलितों के सामाजिक परिवर्तन का अनुपम युग हैं। अन्तिम दशक में दलितों के सामाजिक परिवर्तन में पूर्णतः बदलाव आया है। इसी युग में दलितों की सामाजिक चेतना को 'स्वर' मिला। द्विदशक की कहानियों ने इस 'स्वर' को अभिव्यक्त किया। रत्नकुमार सांभरिया की 'फुलवा' कहानी द्विदशक के समय की सामाजिक परिवर्तन की[1] प्रमुख कहानी कहलायी जायेगी। 'शिक्षित बनो, संगठित और संघर्ष करो' इस बाबासाहेब के दिये हुए मंत्र को कहानी नायिका फुलवा ने संभाला, संवारा और अपने बेटे को 'कमिश्नर' बनाया। आज फुलवा के घर सभी जाति–धर्म के लोग आना–जाना करते हैं। यहाँ तक ही नहीं, पाँव तक पड़ते हैं। फुलवा के घर (कपड़े बर्तन, माँजने वाली नौकरानी के रूप में कुँवर राजपुतानी काम करती है। गाँव की गंदी नालियों पर रहने वाली फुलवा आज शहर के चर्चित मुहल्ले में स्थित है।)

ओमप्रकाश वाल्मीकि की **'अंधड़'** सामाजिक परिवर्तन की दूसरी कहानी कहलायी जायेगी। इस कहानी का नायक पहले सुक्कड़ था वह 'वैज्ञानिक' बनते ही मि.एस. लाल हो गया। आज वह राजधानी की पॉश कॉलोनी के शानदार फ्लैट में रहते हैं, जहाँ उनके अतीत की परछाई तक नहीं पहुँच सकती। बच्चे अंग्रेजी पब्लिक स्कूलों में पढ़ते हैं। सुक्कड़ का 'वैज्ञानिक' बनना सबसे बड़ा परिवर्तन है। शत्रुध्न कुमार की 'तबादला' कहानी में चमार दीने का शैलेश वह 'मेडिकल अफसर' बना। विपिन बिहारी की 'तीर्थयात्रा' कहानी का नायक एम. राम (हरिजन) इंजिनियर है। उसका विवाह अंतर्जातीय विजया शुक्ला से हुआ है। अतः स्पष्ट है कि हजारों सालों

[1] बीसवीं शताब्दी के अंतिम द्विदशक की हिन्दी कहानी में दलित जीवन डॉ0 गौतम सोनकांबले पृष्ठ सं0–142

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

से गुलाम रहा समाज बीसवीं शताब्दी में परिवर्तन पाया। आज सभी स्तरों पर सामाजिक बदलाव आया है। एक जमाने में दलित स्त्री की नंगी बारात निकाली जाती वही स्त्री आज सरकार को शरणार्थी बना लेती है। आज उत्तर प्रदेश का चित्र देखा तो वहाँ दलितों का ही राज हैं मोहनदास नैमिशराय की आवाजें कहानी भी सामाजिक परिवर्तन की कहानी है। उसमें नयी पीढ़ी उद्घोषणा करती है कि ''जूठन नहीं लेंगे– न खायेंगे और न ही गंदगी साफ करेंगे।'' इस प्रकार इस कहानी में दलितों में सामाजिक परिवर्तन पाया जाता है।

सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन के पीछे महात्मा फुले और डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर की परिवर्तनवादी विचारधारा की भूमिका रही है। इनकी क्रांतियाँ सामाजिक परिवर्तन की दिशा को नयी गति देने के लिए संघर्षरत है। सामाजिक परिवर्तन का ही परिणाम है कि, दलित समाज में नयी चेतना विकसित हो रही है। और वह निरंतर अपनी अस्मिता और पहचान की लड़ाई को धारदार बनाने की दिशा की ओर अग्रसर हो रहा है। अतः बीसवीं शताब्दी में पूर्णतः सामाजिक परिवर्तन हुआ है।

साहित्य में अगला दलित–विमर्श दलित लेखन को लेकर है। सवाल यह है कि दलित लेखन कौन कर सकता है वह जो स्वयं जन्मना दलित हो या वह गैर–दलित जो केवल सहानुभूति के आधार पर दलित साहित्य लिखता है। दलित साहित्य को लेकर साहित्य में एक तरह का वाक् युद्ध छिड़ा हुआ है। बंशीधर त्रिपाठी ने अपने एक लेख 'दलित साहित्य का सृजनः उत्तर दायित्व किसका? ''में दलितों का उद्धारक दलित को ही मानते हैं वे लिखते हैं कि ''जब तक दलित वर्ग स्वयं औरस (प्रामाणिक) साहित्य नहीं रचता है, तब तक वह किसी न किसी रूप में दलित बना रहेगा। अगर दलित वर्ग को कोई उद्धारक हो सकता है, तो स्वयं दलित हो सकता है, दलितेतर नहीं। अम्बेडकर के पास दलित–पीड़ा की प्रत्यक्ष अनुभूति थी।

हिन्दी साहित्य में दलित–विमर्श के रूप में चर्चा का केन्द्र उत्तर–आधुनिक दलित–विमर्श को लेकर है। साहित्य में उत्तर–आधुनिक दलित– विमर्श पर चर्चा करते हुए देवेन्द्र चौबे लिखते हैं कि आज जब हिन्दी साहित्य के सामने 'दलित पाठ' के रूप में एक नया साहित्यिक पाठ आकर खड़ा हो गया है और अपने विचार तथा अनुभव के कारण यह पाठक के अन्दर उत्तेजना एवं वंचित समाज के पक्ष में सर्जनात्मक मासिकता का विकास कर रहा है, तब हम सिर्फ पवित्रता और उत्कृष्टता जैसी परम्परागत दहलीज के कारण उसे सही पाठ के रूप में स्वीकार करने में हिचक रहें है, जबकि भारतीय और विदेशी

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018
जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

समाज वैज्ञानिकों के लिए इस वंचित समाज की परम्पराएं, मान्यताएं और अनुभव आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं, लेकिन यह पवित्रता और उत्कृष्टता हमारे बीच इस तरह से आकर खड़ी हो गई है कि हम साहित्य में व्यक्त हो रहे इस नए अनुभव और समाज के आन्दोलन के व्यापक महत्व पर ध्यान दिये बगैर, इसे नकरारने पर तुले हैं अथवा मनचाहे विचार के साथ जोड़कर देखने की वकालत कर रहे हैं। दूसरी तरफ रचना के इस व्यापक परिदृश्य के बीच से तथा कुद खास कारणों से केवल 'कुछ' ऐसे साहित्य को अच्छा मानकर स्वीकार कर लेते हैं जिसमें न तो कोई ऐसा नया अनुभव है और न ही आंदोलन, जैसा कि दलित रचनाओं, खासकार ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'जूठन', धर्मवीर की 'कबीर के आलोचक', मोहनदास नैमिशराय की 'अपने–अपने पिंजरे' जैसी कृतियों में है। बावजूद इसके कुछ साहित्यिक विचारक यह भ्रम–पाले हुए हैं कि प्रत्येक काल में लिखा हुआ यह 'कुछ' ही साहित्य के अस्तित्व और उसकी अर्थवत्ता को बनाए रखता है। इसी पर चर्चा करते हुए डॉ0 नामवर सिंह जी कहते हैं कि ये जो उत्तर–आधुनिकता के नाम पर या उत्तर–संरचनावाद के नाम पर जो एक नई विचारधारा आयी है। खासतौर से तथाकथित विकासशील तीसरी दुनियां कहे जाने वाले देशों के लिए, जहां के समाज परम्परावादी कहलाते हैं और जहां जाति और धर्म की अनेक श्रेणियां बनी हुई हैं– सामाजिक इकाई का यह भेद अधिक महत्वपूर्ण हो उठता है। यहीं से 'पॉलिटिक्स ऑफ आइडेण्टिटी' याय 'अपनी पहचान की राजनीति' शुरू होती है। यह इसलिए महत्वपूर्ण नहीं बतायी जाती कि आज भारत की पहचान विश्व में क्या हो, बल्कि इसलिए कि विश्व में या भारत में एक दलित की पहचान क्या हो? वस्तुतः यह शिनाख्त या पहचान थोपी गयी है। तब ऐसे में दलित यह सोचने लगे हैं कि उनकी अपनी 'अस्मिता' की पहचान अब जरूरी और महत्वपूर्ण है, फिर यही कोशिश साहित्य में भी कर रहे हैं– चाहे उनका वस्तु–तत्व और उनकी संवेदना, उनकी भाषा को बदलती हो या न बदलती हो। इसलिए साहित्य में यह 'अस्मिता की पहचान का अमूर्तवादी, कटा–कटा दर्शन विकसित हुआ।

इस प्रकार दलित–साहित्य में जहां एक ओर उसका वस्तु–तत्व, उसकी संवेदना, उसकी भाषा को लेकर अंगुली उठायी जा रही है, वहीं दूसरी ओर देवेंद्र चौबे यह कहते हैं कि दलित पाठ में यह क्षमता है कि पाठक को गहराई के साथ प्रभावित कर सके, खासकर दलित आत्म कथाएं। दलित आत्मकथात्मक कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि जहां गैर–दलित आत्मकथाएं केवल स्वयं से सम्बोधित होती हैं, वहां दलित आत्मकथाएं स्वयं से आगे बढ़कर उस

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतराराष्ट्रीय पत्रिका
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी 2018

राजनीति से भी टकराने की कोशिश करती हैं जिसके कारण उनका समाज हाशिए की जिन्दगी व्यतीत करने को विवश होता है।

इस प्रकार से आज दलित पाठ, अपनी ऊर्जा और जीवंतता से सारे माध्यमों को उद्वेलित कर रहा है। मिशेल फूको अपने कथन में जिस 'धीमी प्रक्रिया' को जानने की बात करते हैं, यह वही रास्ता है, जिस पर महत्त्वपूर्ण हो उठा है और बिना इस पाठ से टकराये आज साहित्य की प्रासांगिकता और व्यापकता पर सार्थक बातचीत नहीं हो सकती है।

आशीष कुमार'दीपांकर'
छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
मो0नं0– 09795508915

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बीसवीं शताब्दी के अन्तिम द्विदशक की कहानी में दलित जीवन– डॉ0 गौतम सोनकांबले, संस्करण–2011
2. दलित चेतना के सन्दर्भ में कथाकार ओमप्रकाश वाल्मीकि– डॉ0 जोगिन्द्र कुमार सन्धू, संस्करण–2012
3. दलित स्त्री के तिहरे शोषण को साहित्य में उठाया जाना साक्षात्कार विमल थोराट, अगस्त–2004
4. दलित विमर्श की भूमिका– सम्पादक कँवल भारती
5. अभिप्राय / 22–23 विशेषांक स्वाधीनता की अवधारणा और निराला सम्पादक राजेन्द्र कुमार, अक्टूबर–1999
6. दलित जीवन की कहानियाँ सम्पादक गिरिराज शरण, संस्करण, 2002
7. आवाजें, मोहनदास नैमिशराय संस्करण–1998
8. नागार्जुन का कथा साहित्य, तेज सिंह
9. चार इंच की कलम, कुसुम वियोगी
10. सलाम– ओमप्रकाश बाल्मीकि
11. दलित साहित्य की विकास यात्रा– डॉ0 रामचन्द्र, साहित्यिक संस्थान गाजियाबाद, संस्करण–2013
12. दलित साहित्य, परम्परा और विन्यास– डॉ0 एन0सिंह, साहित्यिक संस्थान गाजियाबाद – संस्करण–2011
13. दलित चेतना की कहानियाँ बदलती परिभाषाएं– राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण 2010
14. समकालीन हिन्दी कहानियों में दलित चेतनाः एक अध्ययन, डॉ0 रमेश कुमार, सिद्धार्थ बुक्स दिल्ली, संस्करण 2014
15. दलित साहित्य में प्रमुख विधाएं–माता प्रसाद, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण– 2014

Jankriti International Magazine
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.0202
www.jankritipatrika.in
Volume 3, Issue 33, January 2018

जनकृति अंतरराष्ट्रीय
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 2.
www.jankritipatr
वर्ष 3, अंक 33, जनवरी

पत्रिकाएँ

1. अम्बेडकर टुडे, सं. राजीव रत्न, विधान सभा के सामने लखनऊ, उ.प्र.
2. दलित टुडे, सं. महीपाल सिंह, शास्त्रीय नगर, गाजियाबाद, उ.प्र.
3. वागर्थ (जून–2004) सं. रविन्द कालियाँ, भारतीय भाषा जून परिषद कोलकाता।
4. दलित आत्मकथाओं की जरूरत वैचारिकी– राजेश पासवान, हंस अगस्त–2004
5. उत्तर–प्रदेश / सितम्बर–अक्टूबर–2002
6. मोहन दास नैमिशराय, दलित विशेषांक, हंस अगस्त–2004
7. दलित अस्मिता– विमल थोराट– नई दिल्ली
8. दलित साहित्य वार्षिकी– जयप्रकाश कर्दम, संस्करण (2014 एवं 2015)

JANKRITI जनकृति
A MULTILINGUAL INTERNATIONAL MAGAZINE